

परिस्थितियों को पहले भांप लिया था और उस समय ही हिंदू-मुस्लिम,जातिगत एकता व बंधुत्व पर अपनी रचना की। अपने रचनाकर्म के माध्यम से जनसामान्य को जागरूक करने का प्रयास करते हुए समता,ममता व समरसता की बात करते हैं। सामाजिक असंतुलन के आज के विभ्रमकारी दौर में हमें इन साहित्यकारों के रचनाओं को फिर से पढ़ने की जरूरत है क्योंकि इसमें सामाजिक समरसता, समानता, न्याय और सामासिकता की एक अदभुत छटा निखर कर आती है जो हिंदी साहित्य की सच्ची प्रस्तावना है।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, *हिंदी साहित्य का आदिकाल*, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1952
2. बलदेव उपाध्याय, *वैदिक साहित्य एवं संस्कृति*, शारदा संस्थान, वाराणसी, 1969
3. कृष्ण चंद्र, *भारतीय संस्कृति*, सुरभारती प्रकाशन, दिल्ली, 1992
4. गोपाल कृष्ण, *भारत की संत परंपरा और सामाजिक समरसता*, मध्य प्रदेश ग्रन्थ अकादमी, 2015
5. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, *हिंदी साहित्य का इतिहास*, लोकभारती प्रकाशन, 2013
6. डॉ रामधारी सिंह दिनकर, *संस्कृत के चार अध्याय*, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 1946
7. शिव कुमार मिश्र, *भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य*, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली
8. शंभूनाथ (सं.), *जातिवाद और रंगभेद*, वाणी प्रकाशन, 1990
9. रामस्वरूप चतुर्वेदी, *हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

‘शृंखला की कड़ियां’निबंध में नारी चेतना

अंजली कुमारी

शोध छात्रा हिंदी विभाग

केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश मो.7018930339

शोध सारांश- भारतीय समाज में स्त्री को सामान्य मानव के बजाय त्याग एवं बलिदान की मूर्ति और देवतुल्य व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया जाता रहा है। स्त्री से एक पुत्री, बहन,पत्नी या किसी अन्य रूप में सदैव अपेक्षा की जाती है कि वह अपने अधिकारों और इच्छाओं की बलि देकर समझौता करे।‘शृंखला की कड़ियां’ निबंध में महादेवी वर्मा ने स्त्रियों के होते आ रहे अन्याय शोषण और विभिन्न परिस्थितियों को आधार बनाकर नारी चेतना संबंधी अपने विचारों को प्रस्तुत किया है। उनके निबंध में विद्रोह पूर्ण स्वर में समाज में व्याप्त रूढ़िवादी मानसिकता का विरोध किया है जो समाज के ठेकेदारों के असंवेदनशील शोषण वृत्ति का परिणाम है।पुरुष प्रधान समाज में नारी से संबंधित सामाजिक विषमता, शिक्षा की कमी के कारण नारियों में अपने अधिकारों के प्रति अज्ञानता,लोकलाज , स्त्रीत्व के नाम पर नारी का मानसिक और शारीरिक शोषण ,आरक्षण के नाम छलावा, लेडीज़ फर्स्ट आदि ऐसे विषय है जिन पर लेखिका का ध्यान आज से नौ दशक पूर्व केंद्रित हुआ। इसलिए लेखिका ने अपने साहित्य के माध्यम से नारी चेतना का जो आह्वान किया वह आज भी समस्त नारी जाति के लिए अनुकरणीय है।

बीच शब्द - लोकलाज ,अज्ञानता, उत्तराधिकार, अस्तित्व, मानसिकता, भारत, नवजागरण।

प्रस्तावना - हिंदी साहित्य की छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा सन 1931ईस्वी में प्रकाशित "शृंखला की कड़ियां" निबंध संग्रह में भारतीय समाज में स्त्री विमर्श ,समाज का नारी के प्रति दृष्टिकोण, नारी चेतना और विमर्श और मानवीय संबंधों के विश्लेषण को प्रस्तुत किया है जो उनके गहन आत्मिक अनुभूति का परिचायक है। इतिहास साक्षी है कि सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक ,आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों से नारी जीवन में कई तरह के उतार-चढ़ाव आते रहे हैं। परिस्थितिया बदलने के साथ शासन व्यवस्था ने नारी की जीवन शैली में भी बदलाव लाने का प्रयास किया है जिसके परिणामस्वरूप आज नारी का अस्तित्व भी बदला है। 21वीं शताब्दी में नारी विमर्श साहित्यकारों की लेखनी और चर्चा के केंद्र में है। परंतु अधिकतर साहित्यकारों ने बिना किसी आंदोलन के नारी उत्पीड़न और चेतना को अपनी लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।महादेवी वर्मा ने जीवंत नारियों के संघर्ष ,सुख दुख,आशा निराशा आदि मनोभावों का साक्षात्कार उन्हें अपने अंतःकरण से किया है। उनका कहना था" संसार परिवर्तनशील है ,यहां बड़े-बड़े साम्राज्य बह गए, संस्कृतियां लुप्त हो गई ,जातियां मिट गई,रीति रिवाज बदल गए, रूढ़ियां टूट गई।सब कुछ बदल गया पर स्त्रियों की दशा नहीं बदली है।" लेखिका के जीवन काल में जिन स्त्रियों के साथ संपर्क हुआ उनकी दारुण व्यथा का प्रत्यक्ष अनुभव किया और पुरुष प्रधान समाज में स्त्री विरोधी मानसिकता ने उन्हें व्यथित किया। भारतीय नारी जीवन भर विषम परिस्थितियों का सामना करती हुई स्वयं को समर्पण करने पर भी समाज में उपेक्षित रही। महादेवी वर्मा लिखती है कि "मैं भारतीय नारी की विषम परिस्थितियों को अनेक दृष्टि बिंदुओं से देखने का प्रयास किया है। अन्याय के प्रति मैं स्वभाव से असहिष्णु हूँ अतः इन निबंधों

में उग्रता की गंध स्वाभाविक है, परंतु ध्वंस के लिए ध्वंस के सिद्धांत में मेरा कभी विश्वास नहीं रहा। मैं तो सृजन के उन प्रकाश तत्वों के प्रति निष्ठावान हूँ जिनकी उपस्थिति में विकृति अंधकार के समान विलीन हो जाती है। उन्होंने नारी चेतना के संदर्भ में पुनः उल्लेख किया है कि भारतीय नारी भी जिस दिन अपने संपूर्ण प्राणप्रवेग से जाग सके उस दिन उसकी गति रोकना किसी के लिए संभव नहीं। उसके अधिकारों के संबंध में यह सत्य है कि वह भिक्षावृत्ति से न मिले हैं न मिलेंगे।² जिस समाज में विसंगतियाँ, रूढ़िवादी परंपराओं, मानसिक विकृतियों का सामना करने में जितनी अधिक ऊर्जा सक्रिय होती है। वह समाज उतना ही चेतना युक्त होता है। चेतना के संदर्भ में रत्नाकर पाण्डेय लिखते हैं "चेतना सामाजिक वातावरण से विकसित होती है, वातावरण के प्रभाव से व्यक्ति नैतिकता और उचित व्यवहारिकता प्राप्त करता है। चेतना और मनुष्य के सामाजिक चरित्र में मौलिक संबंध है क्योंकि मनुष्य केवल चेतना से उत्पन्न प्रेरणा के कारण ही कोई भी कार्य करता है। चेतना वह एक विशेष गुण है जो मनुष्य को जीवित बनाती है और चरित्र वह सामाजिक संगठन है, जिसके द्वारा वास्तविकता व्यक्त होती है और जीवन के विभिन्न कार्य चलते रहते हैं। किसी मनुष्य की चेतना उसकी व्यक्तिगत संपत्ति न होकर सामाजिक उपक्रम का परिणाम होती है।"³ लेखिका के मन में यह प्रश्न बार-बार कौंधता है कि स्त्री के मातृत्व को महिमा मंडित करने वाला तथा यत्र नार्यस्तु पूज्यंते तत्र रमंते देवता आदि शब्दों के छलावे में भ्रमित करने वाला समाज नारी के प्रति संवेदनहीनता और मानवीयता की सारी सीमाएँ कैसे लग सकता है? स्त्री विमर्श की इस यात्रा में जब लेखिका का जब नारी की इस विषाक्त यात्रा से साक्षात्कार होता है तो नारी चेतना के असंख्य प्रश्न अपने आप उभरने लगते हैं। "नारीत्व का अभिशाप" नामक निबंध में महादेवी वर्मा लिखती हैं कि "क्या नारी के बड़े से बड़े त्याग को, आत्म निवेदन को, संसार ने अपना अधिकार नहीं किंतु उसका अद्भुत दान समझकर नम्रता से स्वीकार किया है? कम से कम इतिहास तो नहीं बताता कि उसके किसी बलिदान को पुरुष ने उसकी दुर्बलता की अतिरिक्त कुछ और समझने का प्रयत्न किया।"⁴ प्राचीन समय में अधिकतर समाज में स्त्री की आर्थिक निर्भरता ने पुरुष स्त्री के संबंधों को मालिक और दासी के संबंधों के रूप में परिभाषित किया है। समाज में संपत्ति का उत्तरदायित्व मिलने से पुरुष को एक प्रकार का उत्तराधिकार तो मिल गया था। शारीरिक शक्ति अधिक होने तथा सामाजिक नियमों का निर्माता होने के कारण अधिकार मिलना भी स्वाभाविक था। इस प्रकार भारतीय समाज में एक पुत्री, बहन, पत्नी, माता आदि का अस्तित्व होने के साथ-साथ नारी सदैव आर्थिक निर्भरता दृष्टि से परामुखोपेक्षणी रही है। इसके अतिरिक्त भारतीय समाज में नारी को सहचरी, अर्धांगिनी, पत्नी जैसे असंख्य दर्जा प्राप्त हुआ है, लेकिन वास्तविक रूप में वह आज भी पुरुष के समान दर्जा प्राप्त न कर सकी। "समय की गति के अनुसार न बदलने वाली परिस्थितियों ने स्त्री के हृदय में जिस विद्रोह का अंकुर जम जाने दिया है उसे बढ़ने का अवकाश यहीं घर बाहर की समस्या दे रही है। जब तक समाज का इतना आवश्यक अंग अपनी स्थिति से असंतुष्ट तथा अपने कर्तव्य से विरक्त है, तब तक प्रयत्न करने पर हम अपने सामाजिक जीवन में सामंजस्य नहीं ला सकते। केवल स्त्री के दृष्टिकोण से ही नहीं, वरन् हमारे सामूहिक विकास के लिए यह भी आवश्यक होता जा रहा है कि स्त्री घर की सीमा के बाहर भी अपना विशेष कार्य क्षेत्र चुनने को स्वतंत्र हो।"⁵ इस प्रकार लेखिका ने "श्रृंखला की कड़ियाँ" निबंध संग्रह में सदियों से चली आ रही स्त्रियों की अस्तित्व को पुनर्स्थापित कर नारी चेतना का संदेश दे कर मुख्य धारा के साथ जोड़ने का प्रयास किया है।

यद्यपि आधुनिक नारी का संघर्ष पुरुष से नहीं अपितु समाज में व्याप्त रूढ़िवादी मानसिकता से है। आज की नारी न पुरुष की छाया बनकर जीना चाहती है और न ही वह गुलामी सा जीवन व्यतीत करना चाहती है। जिस प्रकार पुरुष को घर, परिवार, समाज में जो स्थान प्राप्त है, आधुनिक नारी भी प्रत्येक क्षेत्र में समानता का दर्जा प्राप्त करना चाहती है। जीवन के विकास के लिए दूसरों से सहायता लेना बुरा नहीं, परंतु किसी को सहायता दे सकने की क्षमता न रखना अभिशाप है। सहायता वे कहे जाते हैं जो साथ चलते हैं, कोई अपने बोझ को सहायता कह कर अपना उपहास नहीं कर सकता। भारतीय पुरुष ने स्त्री को या तो सुख के साधन के रूप में पाया या भार रूप में, फलता वह उसे सहयोगी का आदर न दे सका।⁶

भारतीय समाज में विषम अर्थ विभाजन भी नारी शोषण का मूल कारण रहा है। पुरुष प्रधान समाज में अपने स्वामित्व के लाभ से उसे परावलंबी भी बना दिया है, जिसके परिणाम स्वरूप समाज में नारी की स्थिति द्वंद्व ग्रस्त रही है जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय नारी समाज में सदैव हाशिए पर रही है। लेखिका के लिए यह चिंता का विषय है कि आज भी व्यवस्थापकों द्वारा आरक्षण रूपी शब्दों में छली जा रही है। इसलिए प्रतिभाशाली शिक्षित स्त्रियाँ अपनी प्रतिभा से परिवार और समाज में सामंजस्य स्थापित कर इस छलावे से मुक्ति पा सकती है। इस संदर्भ में लेखिका को यह कहने में कोई संकोच नहीं कि "स्त्रियों के उज्ज्वल भविष्य को अपेक्षा रहेगी कि उसके घर और बाहर में ऐसा सामंजस्य स्थापित हो सके, जो उसके कर्तव्य को केवल घर या केवल बाहर ही सीमित न कर दें। ऐसी सामंजस्यपूर्ण स्थिति के उत्पन्न होने में अभी समय लगेगा और संभव है यह मध्य का समय हमारी क्रमागत सामाजिक व्यवस्था को कुछ डाँवाडोल भी कर दे, परंतु निराशा को जन्म देने वाले कारण नहीं उत्पन्न होने चाहिए।"⁷

किसी भी युग में नवीन चेतना, नवजागरण, आंदोलन सामान्यतः सामाजिक समस्याओं एवं रूढ़िवादी परंपराओं को लेकर किए गए हैं। भारत जैसे धार्मिक सांस्कृतिक देश में स्त्रियों से संबंधित समस्याओं के नए रूप में उत्पन्न होते रहे हैं, जैसे दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, बलात्कार, कन्या भ्रूण हत्या, आर्थिक एवं सामाजिक विषमता को लेकर पूरे देश में चलाए जा रहे आंदोलन नारी चेतना का जीता जागता प्रमाण हैं। सिमोन की पुस्तक "दि सेकंड सेक्स" उस घुटन भरी स्त्री के हजारों वर्षों की परिस्थिति का जीता जागता दस्तावेज है, जिसमें उसका मनचाहे रूप में पुरुष ने शोषण किया है। इसलिए सिमोन स्त्री और नीग्रो की तुलना करती है। समाज जड़ नहीं चेतन है। यह चेतना ही समझ में बदलाव लाती है। जो समाज समय के साथ नहीं बदलते, वे ऊर्जाहीन हो जाते हैं।⁸ महादेवी वर्मा के लिए नारी शोषण की कड़वी सच्चाई को आत्मसात करना अत्यंत दुष्कर है। वह समाज में माता-पिता का अपनी ही पुत्री के प्रति पालन पोषण, शिक्षा, विवाह, उत्तराधिकारी से संबंधित दृष्टिकोण को लेकर लेखिका के हृदय में टीस उत्पन्न करती है। इसके लिए वह दृष्टिकोण और परिस्थितियों को दोष देती है। "यदि हम शताब्दियों से केवल सिद्धांतों का निर्जीव भार लिए हुए शिथिल हो रहे हैं तो हमारा और हमारी परिस्थितियों का दोष है।"⁹ पितृ सत्तात्मक समाज में पुरुष यह कैसे भूल जाता है कि नई आज भी आज्ञाकारिणी पुत्री, बहन, पतिव्रता पत्नी और त्यागमयी माता होने के साथ एक मनुष्य भी है। "स्त्री किस प्रकार अपने हृदय को चूर चूर कर पत्थर की देव प्रतिमा बन सकती है, यह देखना हो तो हिंदू गृहस्थ की दूधमुँही बालिका से शापमयी युवती में परिवर्तित होती हुई विधवा को देखना चाहिए जो किसी अज्ञात व्यक्ति के लिए अपने हृदय की, हृदय के सामान् इच्छाएं

कुचल कुचल कर निर्मूल कर देती है ,सतीत्व और संयम के नाम पर अपने शरीर और मन को आमामनुषिक यंत्रणाओं के सहने का अभ्यस्त बना लेती है।"10 भारतीय परिवेश में नारी का व्यक्तित्व कर्तव्यों , रूढ़िवादी परंपराओं , सामाजिक मान्यताओं के बंधन में बंधे रहने के कारण नारी चेतना का विकास नहीं हुआ ।उन्हें बचपन से इस प्रकार की शिक्षा दी गई कि उसे अपने परिवार की मान्यताओं, परंपराओं ,आदर्शों को ही अपने जीवन में स्वीकार करना है ।जिसके परिणाम स्वरूप स्त्री सब कुछ सहन करने के लिए तैयार रही मानो सहनशीलता ही उसका आभूषण है। वास्तव में नारी ही परिवार का मूल केंद्र है ,जहां उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है। भविष्य में उसे किस प्रकार उत्तरदायित्व एवं समस्याओं का सामना करना पड़ेगा यह उसे परिवार के रूढ़िवादी सांचे में ही समझाया जाता है। इसलिए भारतीय समाज में नारियों को अपने अधिकारों के विशाल फलक से अलग रखा जाता है ताकि उनकी महत्वाकांक्षाएं फलीभूत नहीं हो सके ।ऐसी स्थिति में नारी के अस्तित्व का मैं कुंठित होकर रह जाता है। स्त्री पुरुष की प्रकृति में अंतर होने के परिणाम स्वरूप पुरुष ने स्त्री को अपने साथ कभी संघर्ष होने ही नहीं दिया, अन्यथा आज मानव जाति की अलग कहानी हमारे सामने होती है। नई चेतना अपनी पहचान एवं नारी अस्मिता का बोध कराती है और अपने अपनी अस्तित्व बनाने की प्रेरणा भी देती है। चेतना नारी को विभिन्न परिस्थितियों को समझने की समझ भी देती है जिससे वह अपने हित और अहित को लेकर जागरूक हो सके ।यही कारण है क्या आधुनिक शिक्षित हुआ चेतनशील नारी रूढ़िवादी परंपराओं ,अंधविश्वासों, धार्मिक मान्यताओं आदि का खंडन कर रही है। यदि लेखिका के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विश्लेषण करते हैं तो प्रतीत होता है कि भारतीय संस्कृति ने स्त्री को शिक्षित होने की जहां प्रेरणा दी वहां नारी स्वावलंबी बनी ।आर्थिक स्वतंत्रता,समानता ने स्त्री की जीवन शैली को परिवर्तित कर दिया ।सार रूप में कहा जाए तो वैश्वीकरण के इस दौर में नारी चेतना को एक नई पहचान दी है।

निष्कर्ष - इस प्रकार "श्रृंखला की कड़ियां निबंध" में महादेवी वर्मा ने नौ दशक पूर्व नारी को समाज की महत्वपूर्ण इकाई के रूप में देखने की जो अंतर्दृष्टि दी है वह समस्त नारी जाति के लिए प्रेरणा स्रोत है।इनके संपूर्ण साहित्य पर विचार करने के बाद कहा जा सकता है कि इक्कीसवीं सदी में महादेवी वर्मा को नारी सशक्तिकरण के प्रेरणा स्रोत के रूप में याद की जाती रहेगी।

संदर्भ सूची -

- 1.प्रतियोगिता दर्पण, उपकार प्रकाशन, आगरा,अप्रैल 2016, आधी दुनिया का पूरा सच, नीलमणि शर्मा,पृष्ठ 98
- 2.महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियां ,लोक भारती प्रकाशन,इलाहाबाद, संस्करण 2012 पृष्ठ 09

- 3.पांडेय रत्नाकर ,हिंदी साहित्य सामाजिक चेतना, पांडुलिपि प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 158
- 4.महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियां, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद ,नारीत्व का अभिशाप, पृष्ठ 33
- 5.महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियां ,लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद ,घर और बाहर, पृष्ठ 53
- 6.महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियां ,लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, स्त्री के अर्थ स्वातंत्र्य का प्रश्न,पृष्ठ 90
- 7.महादेवी वर्मा ,श्रृंखला की कड़ियां, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद ,घर और बाहर, पृष्ठ 54
- 8.वी एन सिंह/जनमेजय सिंह, नारीवाद रावत पब्लिकेशंस, जयपुर, स्त्री विमर्श :स्त्री सशक्तिकरण का प्रश्न ,संस्करण 2024, पृष्ठ 108
- 9.महादेवी वर्मा ,श्रृंखला की कड़ियां ,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,जीने की कला,पृष्ठ 125
- 10.महादेवी वर्मा ,श्रृंखला की कड़ियां, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, जीने की कला,पृष्ठ 125